Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.38, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2019, VOL- 7/55

हिंद महासागर भू राजनीतिक अवस्थिति

हेमन्त कुमार पाण्डेय[1], Ph. D. & मनोज कुमार मलिक[2]

[1]सह- आचार्य, रक्षा अध्ययन विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ

[2]शोध छात्र, रक्षा अध्ययन विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

हिंद महासागर के संदर्भ में के एम पणिक्कर ने टिप्पणी करते हुए लिखा कि भू राजनैतिक स्थिति के कारण यूरोप के देशों के लिए इसका महत्व है क्योंकि यह भारत,सुदूर पूर्व एवं ऑस्ट्रेलिया आने का मार्ग है इसलिए यूरोपीय शक्तियों का राजनीतिक सैनिक व आर्थिक आकर्षण हिंद महासागर के लिए बढ़ता जा रहा है इसलिए यह भविष्य का महासागर बन गया है जबकि अटलांटिक एवं प्रशांत महासार भूतकाल के महासागर बन चुके है। का उक्त कथन सत्य प्रतीत होता है क्योंकि हिंद महासागर की विशिष्ट स्थिति ने बाह्य शक्तियों को इस ओर अत्यधिक आकर्षित किया है भारत के दक्षिण में स्थित हिंद महासागर एक ऐसा क्षेत्र है जहां विश्व के लगभग दो तिहाई देशों के हित परस्पर टकराते है।भारत चीन जापान ऑस्ट्रेलिया सहित दक्षिण व पश्चिम एशिया के लिए आर्थिक व सैनिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हिंद महासागर तीसरा बड़ा महासागर है

हिंद महासागर सबसे व्यापक सैनिक व व्यापारिक महत्व का क्षेत्र है उत्तर पश्चिम व दक्षिण पूर्व का इलाका इस क्षेत्र के देशों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए महाशक्तियों में लगातार होड़ मची रहती है मगर यहां इस तरह सोच समझकर राजनीति खेली जाती है कि टकराव की स्थिति ना आए भले ही हमेशा तनावपूर्ण स्थिति क्यों नहीं बनी रहे हिंदमहसागर से होकर जाने वाले प्रमुख समुद्री मार्ग एवं स्थल से घिरा होने के कारण इसका भू राजनैतिक महत्व अत्यधिक है।

इसके प्रमुख मार्ग विश्व के अन्य भागों से इसे जोड़ते हैं भारतीय प्रायद्वीपीय स्थिति ने हिंद महासागर का भू राजनैतिक महत्व अत्यधिक बढ़ा दिया है ।भौगोलिक दृष्टि से दक्षिण एशिया में केंद्रीय स्थिति होने के कारण क्षेत्र की सुरक्षा में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है भारत के सभी बंदरगाह बंगाल की खाड़ी एवम् अरब सागर जो हिंद महासागर के ही भाग है मे ही स्थित है हिंद महासागर प्राकृतिक स्त्रोत का भंडार भी था जिसे अब धीरे-धीरे खोजा जाने लगा ।समुद्र तट में पाई जाने वाली जीवाश्म के मिलने से आधुनिक विश्व में हिंद महासागर का महत्व बढ़ गया है ।इसके माध्यम से इसके क्षेत्र के तेलीय देश व तेल का उपयोग करने वाले बाह्य देशों के मध्य व्यापार होने लगा है । अफगानिस्तान और इराक में लड़े गए युद्ध

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के परिणाम स्वरूप अमेरिका ने भी हिंद महासागर को महत्वपूर्ण बनाया ।पिछले कई वर्षों से हिंद महासागर में चीन व भारत के बढ़ते सैन्य शक्ति के करण जी इसका महत्व बढ़ गया । वर्ष 2011 में अमेरिका द्वारा बनाई गई पूर्णसंतुलन की नीति के कारण भी महासागर का महत्व बढ़ गया ।यहां पर भारत चीन अमेरिका जैसे महत्वपूर्ण देश राजनीति की दिशा को तय करते है।

भारत चीन अमेरिका त्रिभुज एवं हिंद महासागर

अमेरिका चीन एवं भारत अपने भू राजनीतिक भू आर्थिक वह विदेश नीति के उद्देश्यों के कारण रणनीतिक चालों में उलझे हुए हैं यहां चीन व अमेरिका संबंध भी निरंतर परिवर्तनशील है जहां एक तरफ अमेरिका एक स्थापित विश्वशक्ति है तो दूसरी तरफ चीन भी उभरती विश्व शक्ति है दोनों अपनी आर्थिक स्थिति को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए एक दूसरे पर अंतरनिर्भर है लेकिन चीन व अमेरिका के मध्य विचारधारा,राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति तथा संस्कृति में समरूपता नहीं है इसलिए चीन का बढ़ता प्रभुत्व अमेरिका को रास आये यह आवश्यक नहीं है। चीन भी इसी प्रकार अमेरिका के के प्रति सशंकित हैं ।चीन भारत एवं अमेरिका के बढ़ते आपसी संबंधों को लेकर भी चिंतित है वह अमेरिका की पुनर संतुलन की नीति को संदेश की नजर से देखता है तथा भारत को हिंद महासागर का सबसे महत्वपूर्ण सामरिक देश मानने से इनकार करता है अमेरिका जहां चीन की सामुद्रिक शक्ति कि वृद्धि को उचित नहीं मानता वही चीन अमेरिका की सामुद्रिक नीति का आलोचक है अमेरिका अपनी सामुद्रिक नीति के क्रियान्वयन के लिए भारत व श्रीलंका के अलावा आस्ट्रेलिया दक्षिण कोरिया व फिलिपिंस का भी उपयोग करता है ।उसने एशिया पेसिफिक क्षेत्र मे कई देशों से सुरक्षा संबंधी समझ भी विकसित कर रखी है। हिंद महासागर के तटवर्ती देश अमेरिका की सैनिक शक्ति को स्वीकार नहीं करते इसलिए अमेरिका हिंद महासागर के मध्य में कोई बड़ा सैनिक अड्डा बनाने मे विफल रहा है ।1970 व 1980 के दशक में भारत ने हिंदमहासागर को शीतयुद्ध के बढ़ते प्रभाव के कारण विश्वशक्तियों को आपसी प्रतिस्पर्धा का स्थान बनाने का निरंतर विरोध किया।पिछले कुछ वर्षों से भारत के बढ़ते हुए वैश्विक महत्व ने हिंदमहासागर का महत्व भी बढ़ाया है। इसलिए अमेरिका सुरक्षा शब्दावली में एशिया पेसिफिक के साथ साथ इंडो एशिया पेसिफिक शब्द का प्रयोग किया जा रहा है ।अमेरिका के सुरक्षा रणनीतिकार जहा अन्य देश जैसेअफगानिस्तान ईरान इराक चीन उत्तरी कोरिया इत्यादि को संकट एवं संघर्ष के संदर्भ में रेखांकित करते है वही भारत को एक लम्बे समय के लिए सामरिक मित्रता बनाने के लिए उपयुक्त राष्ट्र मानते हैं ।वह यह भी मानते हैं कि भारत आने वाले समय में सुरक्षा वातावरण को बनाने में महत्त्वपूर्ण हिस्सेदारी की भूमिका अदा करेगा है और इस कारण भारत और अमेरिका अपने सहयोग

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

को बनाये रखने तथा उसमे वृद्धि करेगे। जिससे कि एशिया पेसिफिक क्षेत्र में शांति बनी रह सके।पिछले कुछ दशक में चीन ने हिंद महासागर क्षेत्र सुरक्षा एवं निवेश की गतिविधियां बड़ा दी है और ऐसा लगता है कि चीन समुंद्र के साथ साथ हिंद महासागर में भी अपना हस्तक्षेप बढ़ाना चाहता है।

हिंद महासागर के तटीय देशों के कारण भी इसका भू राजनैतिक महत्व बढ़ा है। हिन्द महासागर के तटीय देशों मे विकसित विकासशील व निर्धन देश शामिल है।यहा के देशों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि तेल आयत निर्यात व्यापार पर्यटन तथा उत्पादन है।सभी प्रकार की शासन व्यवस्थाएं जैसे लोकतंत्र राजतंत्र सैनिक शासन तानाशाही तथा धार्मिक कट्टरपंथी शासन वयवस्थाए यहा मौजूद है।विश्व के सबसे बड़े शस्त्र आयातक देश यहा स्थित है।विश्व के दो सबसे व्यस्तम सामुद्रिक जलमार्ग स्वेजनहर तथा मलक्का जलमार्ग इसी क्षेत्र मे स्थित है । हिंद महासागर के कुछ तटीय देशों में तेल एवं अन्य खनिज पदार्थों की उपलब्धता के कारण भी इसका भू राजनैतिक महत्व बढ़ा है। हिंद महासागर के तटीय देशों में राजनीतिक अस्थिरता ,औद्योगिक निवेश की संभावनाएं आतंकवादी नियंत्रण के कारण भी इसका भू राजनैतिक महत्व बढ़ा है। विश्व व्यापार का भाग सामुद्रिक जल मार्गो से होता है तथा भारत का लगभग व्यापार जलमार्गीय ही है ।हिंद महासागर विश्व में मादक पदार्थों के अवैध व्यापार की गतिविधियों का भी केंद्र है विश्व में मादक पदार्थों के उत्पादन देशों में से अफगानिस्तान ईरान पाकिस्तान म्यांमार एवं थाईलैंड हिंद महासागर क्षेत्रीय देशों में है ।हिंद महासागर क्षेत्र की प्रमुख समस्या मादक पदार्थों का उत्पादन एवं व्यापार है । तीन क्षेत्रीय देश अफगानिस्तान ,पाकिस्तान तथा म्यामार विश्व के सबसे बड़े अफीम उत्पादनकर्ता देश है ।हिंद महासागर का सबसे अधिक संवेदनशील क्षेत्र खाड़ी क्षेत्र है। क्षेत्र की जनसंख्या अन्य क्षेत्रों की तुलना में बहुत कम है। इन देशों की राष्ट्रीय आय तेलों के कारण बहुत अधिक है। यही कारण है कि क्षेत्र में शस्त्र आयात बहुत होता है ।विश्व का सबसे बड़ा शस्त्र आयातक देश सऊदी अरब यहीं पर स्थित है । इनमें से अधिकतर का उद्देश्य आर्थिक तथा व्यापारिक बाधाओं को दूर कर क्षेत्रीय विकास को गति प्रदान करना है । विकास एवं सुरक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं एक के बिना दूसरे की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हिंद महासागर के तटीय देश पश्चिमी विकसित एवं शक्तिशाली देशों के निवेश थे दूसरे विश्व युद्ध के पश्चात स्वतंत्र से इन देशों की सरकारें भी अधिक से अधिक अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों में अपना योगदान व भूमिका निभाना चाहती थी केवल राजनीतिक इच्छाशक्ति के अतिरिक्त इन नव स्वतंत्र देशों की आर्थिक व सैनिक स्थिति अत्यंत दयनीय थी फलस्वरुप इन तटीय देशों ने कुछ क्षेत्रीय संगठनों व संघों का निर्माण किया तथा कुछ अंतरराष्ट्रीय संगठनों व फॉर्मो के सदस्य बने। आत्मनिर्भर न होने के कारण तटीय देश अपने संगठन संघों के माध्यम से बाहरी बड़ी

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शक्तियों के राजनीतिक आर्थिक व सैनिक उपस्थिति को समाप्त या सीमित करने में सफल नहीं हो सके । भू राजनैतिक दृष्टिकोण से हिंद महासागर इस स्पाइक मैन के रिमलैंड एवम् मैकिण्डर के हृदय स्थल क्षेत्र का एक हिस्सा है ।वैश्वीकरण के दौर में चीन हिंद महासागर में अपनी दखल बनाए रखना चाहता है ।उसे यहां से यूरोप ,अफ्रीका व मध्य पूर्व से संबंध में हिंद महासागर के रास्ते की आवश्यकता है ।चीन आर्थिक कारणों से हिंद महासागर में बिना रुकावट के परिवहन की व्यवस्था चाहता है। वही भारत उभरते हुए विश्व शक्ति के रूप में हिंद महासागर पर अपना प्रभाव बनाए रखना चाहता है। सैनिक दृष्टिकोण से अमेरिका की स्थिति सबसे शक्तिशाली है ।भारत धीरे-धीरे अपनी सैनिक शक्ति बढ़ा रहा है लेकिन वह सावधानीपूर्वक सभी देशों से मित्रता के व्यवहार से अपनी शक्ति को अन्य देशों द्वारा स्वीकार करने का प्रयास कर रहा है ।वहीं श्रीलंका भी इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराना चाहता है।

सामरिक दृष्टिकोण से केंद्रित भौगोलिक स्थिति के कारण हिंद महासागर सैनिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह ऐसा क्षेत्र है जहां से दक्षिणी गोलार्ध के लगभग सभी देशों की सैनिक गतिविधियों पर नजर और नियंत्रण रखा जा सकता है।अंतर महाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रो के विकास से हिंद महासागर स्थित विभिन्न देशों से रूस के पूर्वी एवं दक्षिणी भाग अफ्रीका मध्य एशिया दक्षिण तथा दक्षिण पूर्व एशिया को आसानी से लक्ष्य बनाया जा सकता है ।दूसरी ओर हिंद महासागर एक ऐसा समुंद्र है जिसमें सबसे अधिक द्वीप है । इन द्वीपों पर नियंत्रण करके संपूर्ण तटीय प्रदेशों तथा विश्व व्यापार को भी अवरुद्ध किया जा सकता है ।इसके जलमार्ग पश्चिम और जापान के लिए जीवन रेखाएं हैं। इसीलिए महान ने 19वीं शताब्दी में ही इसके भू राजनैतिक महत्व को पहचान लिया था। हिंद महासागर क्षेत्र की एक प्रमुख समस्या आणविक प्रसार की है हिंद महासागर क्षेत्र के दो तटीय देश भारत और पाकिस्तान आणविक शस्त्र संपन्न राष्ट्र है। इसके अलावा कुछ और अन्य देश दक्षिण अफ्रीका इजरायल ईरान भी इसकी तकनीकी क्षमता रखते हैं। एक समय इराक भी अपने आणविक कार्यक्रमों को बढ़ा रहा था बगदाद के निकट ओजिरक नाम के स्थान पर एक बड़े आणविक रिएक्टर का निर्माण कर रहा था इस बात से इजरायल चिंतित था कि यदि यह अपने उद्देश्य में सफल रहा तो उसके आणविक बम का निशाना इजराइल ही होगा ।यह इजराइल के अस्तित्व के लिए संकट उत्पन्न कर देगा फलस्वरुप अपनी सुरक्षा हेतु इजराइल ने पहल करते हुए जून 1981 मे अचानक आक्रमण द्वारा इराक के ओजिरक रिएक्टर को ध्वस्त कर दिया। यह हिंद महासागर की नहीं बल्कि पूरे विश्व की अपनी तरह की पहली घटना थी। हिंद महासागर क्षेत्र के दो आणविक देश पाकिस्तान तथा भारत की सीमा पास में मिलती है इन दोनों देशों के संबंध प्रारंभ से ही तनावपूर्ण रहे हैं इन दोनों के बीच चार युद्ध भी हो चुके हैं। पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद का सामना भारत पिछले कई दशकों से करता आ रहा है ।पाकिस्तान विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जहा राजनीतिक स्थिरता सेना के ऊपर निर्भर करती है। हिंद महासागर का आर्थिक महत्व बहुत हद तक इस क्षेत्र के राजनैतिक महत्व को प्रभावित करते हैं ।द्वितीय विश्व युद्ध से पूर्व हिंद महासागर का महत्व मुख्यतः व्यापारिक कारणों से रहा ।अपनी विशेष भू राजनैतिक स्थिति के कारण जहां इसका महत्व व्यापारिक उद्देश्यों के लिए था वहीं दूसरी ओर

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

महासागर में उपस्थित छोटे छोटे टापुओ एवम् द्वीपों का अत्यधिक राजनैतिक महत्व है एक तरफ तो यह टॉपू सैनिक अड्डों की भूमिका निभाते हैं वहीं दूसरी ओर यह है हिंद महासागर पर नियंत्रण रखने के लिए महत्वपूर्ण सामरिक स्थल है । एक कहावत प्रचलित है कि इंग्लैंड ने समुद्र की लहरों पर अपना साम्राज्य स्थापित किया था उसकी सामुद्रिक शक्ति विश्व की सर्वश्रेष्ठ सामुद्रिक शक्ति थी। हिंद महासागर पर उसने अपना वर्चस्व कायम किया ।द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात लगभग 15 वर्षों तक हिंद महासागर ब्रिटेन के आधिपत्य में रहा ।विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई प्रगति ने भी हिंद महासागर की महत्ता को बढ़ा दिया शस्त्रों के क्षेत्र में जटिलताओं व विस्तार ने हिंद महासागर के भू राजनीतिक महत्व को और अधिक बढ़ा दिया ।हिंद महासागर के महत्व में बढ़ोतरी उस समय हुई जब पनडुब्बियों ने इस क्षेत्र में विचरण प्रारंभ कर दिया । पोलारिश पनडुब्बी जो हिंद महासागर में विचरण करती है पूर्व सोवियत संघ के किसी क्षेत्र को अपना निशाना बना सकती हैं ।यह पनडुब्बियों पानी के अंदर तीन महीने तक बिना किसी बाह्य सहायता के रह सकती हैं। इन पनडुब्बियों को 2000 फुट की गहराई पर भी संचालित किया जा सकता है जिसके वजह से इसकी सही स्थिति का पता लगाना कठिन होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है की राजनीतिक एवम् रणनीतिक रूप से हिंद महासागर क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों की अपार संभावनाएं हैं। यह क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हेतु ना केवल क्षेत्रीय देशों के लिए बल्कि बाह्य शक्तियों के लिए भी उच्च क्षमता एवं महत्व का है। यह क्षेत्र भावी अस्थिरता तथा गड़बड़ियों का क्षेत्र भी है। क्योंकि यह क्षेत्र बड़ी शक्तियों के राजनीतिक संघर्षों एवं आर्थिक हितों से जुड़ा हुआ है। अतः यह वैश्विक घटनाओं का केंद्र बिंदु है। अतः भारत को अपनी भू राजनैतिक स्थिति को ध्यान में रखकर अपनी सुरक्षा एवं व्यापार को सुनिश्चित करना चाहिए जिससे किसी भी प्रकार के खतरों का सामना कर सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सतीश चंद्रा-द इण्डियन ओशन सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली 2001 पृ-19
एम एल भार्गव-इण्डियन ओशन स्ट्रेटजी थ्रो द एज रिलायंस पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली -1990 पृ- 332
ए एन कक्कण इंडियन न्यू हाऊस इलाहाबाद-1981 पृ-61
राजा मोहनसी समुद्र मंथन साइनो - इण्डियन राइवलरी इन द इण्डो-पेसिफि कारनेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस वाशिंगटन 2012
राहुल सिंह चाइनाज सबमरींस इन इण्डियन ओशनवरी इंडियन नेवी हिंदुस्तान टाइम्स 7 अप्रैल 2013
जॉन हार्नेट द पावर ट्राइएंगल इन द इण्डियन ओशन चाइना इण्डिया एंड द यूनाइटेड स्टेट्स,कैम्ब्रिज रिव्यू ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स 29 2(जून 2016 पृ 425-43
कासिम एस जेड 2007 जानिये हिंद महासागर को प्रभात प्रकाशन दिल्ली पृ 13
डॉ हरीशरण-हिंद महासागर,चंद्र प्रकाश एण्ड कम्पनी हापुड़ 2004 पृ 33 34

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies